



GS संपूर्ण Free Batch

Modern History (आधुनिक इतिहास) Awadh & Sindh (अवध और सिंध)

Join SelectionWay GS Channel

Join SelectionWay GS Channel

Shubham Gupta Sir



आंग्ल मैसूर संघर्ष

युद्ध	समय	मैसूर	अंग्रेज	परिणाम	कारण	महत्वपूर्ण बिन्दु
प्रथम	1767 - 69	हैदर अली	जनरल स्मिथ	हैदर विजयी - मद्रास की संधि - 4 अप्रैल 1769	1. हैदर का फ्रांसीसी झुकाव 2. हैदर द्वारा कन्नड़ तट पर ब्रिटिश नौसेना पर हमला - 1767	
द्वितीय	1780 - 84	हैदर + टीपू + फ्रांसीसी कमांडर सफ्रे	वॉरेन हेस्टिंग्स	मंगलोर की संधि - 11 मार्च 1784 - मद्रास गवर्नर मैकार्थनी और टीपू	1. मद्रास संधि का उल्लंघन 2. अमेरिकी क्रांति 3. अंग्रेजों ने माहे बंदरगाह पर हमला किया, माहे हैदर के क्षेत्र में	1. हैदर अली ने मुनरो तथा बेली को हराकर आर्कट (कर्नाटक) पर अधिकार 2. पोर्टोनोवा का युद्ध (1 जुलाई 1781) - हैदर अली व आयर कूट
तृतीय	1790 - 92	टीपू	कार्नवालिस + मराठा + निजाम	टीपू की हार - श्रीरंगपट्टनम संधि 1792 (अपमानजनक)	1. टीपू फ्रांसीसी संबंध 2. टीपू का त्रावणकोर पर हमला 3. मंगलौर संधि का उल्लंघन	कार्नवालिस - हमने अपने मित्रों को शक्तिशाली बनाए बिना अपने शत्रु को पंगु बना दिया
चतुर्थ	1799	टीपू	लॉर्ड वेलेजली	टीपू की हार और मृत्यु दक्षिण में अंग्रेज प्रभुत्व	- सहायक संधि नहीं - सेदानीर युद्ध - मालवेली युद्ध - श्रीरंगपट्टनम युद्ध	1. वेलेस्ली को "मार्किव्स" की उपाधि मिली 2. वेलेस्ली - "अब पूरब का राज्य हमारे कदमों में है"

पंजाब

- ❖ खड़क सिंह
- ❖ नौ निहाल सिंह
- ❖ शेर सिंह
- ❖ दलीप सिंह



महाराजा दिलीप सिंह (1843-1849)

- अल्प वयस्क शासक (5 Year) :- संरक्षिका (महारानी जिन्द कौर) :- किला मुबारक
- प्रथम और द्वितीय युद्ध : चिलयावाला का युद्ध (1849) :- लॉर्ड डलहौजी

- 1849:- शासन करने हेतु डलहौजी ने तीन लोगों की परिषद
 - अध्यक्ष → सर हेनरी लॉरेंस
 - दिलीप सिंह → 50,000 पौंड की वार्षिक पेंशन
 - ईसाई धर्म अपनाया
 - कोहिनूर हीरा अंग्रेजों को
 - फ्रांस में मृत्यु और इंग्लैंड में अंतिम संस्कार
- महारानी जिन्द कौर (रानी जिन्दा)**
- 1843 से 1846 तक सिख साम्राज्य की संरक्षिका
 - महाराजा रणजीत की पत्नी
 - अंग्रेज उनको पंजाब का मेस्सालिना कहा करते थे
 - शेखूपुरा किले

वर्ष	घटना	विवरण
1845-46 : लॉर्ड हार्डिंग I	प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध : खालसा सेना ने "पंचायत" प्रणाली अपनाई। 1845 में सेना ने सतलज पार किया	- मुद्रकी की लड़ाई (18 दिसंबर 1845) + फ़िरोज़शाह की लड़ाई (21-22 दिसंबर, 1845) + सबराओं की लड़ाई (10 फरवरी, 1846) - सिखों की पराजय — लाहौर संधि (9 मार्च, 1846) - अमृतसर की सन्धि (16 मार्च 1846): व्यास से सिन्ध तक का प्रदेश (कश्मीर) गुलाबसिंह को एक करोड़ रुपये में बेच दिया - भैरोवाल की संधि (22 दिसंबर 1846)
1848-49 : लॉर्ड डलहौजी	द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध	- अप्रैल 1848 : मुलतान के दीवान मूलराज ने ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या कर दी 13 जनवरी 1849 : चिलयावाला युद्ध: ह्यूग गफ + शेर सिंह अट्टरीवाला - गुजरात/तोपों का युद्ध (चार्ल्स नेपियर : 21 फरवरी 1849):- चेनाब के निकट गुजरात में।
29 मार्च 1849	राज्य का विलय	- लॉर्ड डलहौजी ने चार्ल्स नेपियर के नेतृत्व में, पंजाब का अंग्रेजी राज्य में विलय 3 सदस्य : अध्यक्ष : हेनरी लॉरेंस + जॉन लॉरेंस + चार्ल्स मैन्सेल



मराठा साम्राज्य



पानीपत का तृतीय युद्ध (14 जनवरी 1761)

युद्ध विवरण

पक्ष → अफगानी आक्रांता अहमद शाह अब्दाली

मराठा

युद्ध में एक विशाल आम का पेड़ था, जो युद्ध में मारे गए सैनिकों के खून से लाल हो गया था, और इसी वजह से उसे 'काला आंव' कहा जाने लगा।

परिणाम

मराठा पराजय

मृत्यु - विश्वास राव + सदाशिवराव + तुकोजी सिंधिया

मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय (1759-1806)

महत्वपूर्ण कथन

“जे एन सरकार:- महाराष्ट्र में संभवतः ही कोई ऐसा परिवार होगा जिसने कोई न कोई संबंधी न खोया हो तथा कुछ परिवारों का तो सर्वनाश हो गया”

काशीराज पंडित (प्रत्यक्षदर्शी):- पानीपत का तृतीय युद्ध मराठों के लिए प्रलयकारी सिद्ध हुआ

बालाजी बाजीराव को एक व्यापारी:- दो मोती विलीन हो गए, सत्ताईस सोने की मुहरें लुप्त हो गयी और चांदी तथा तांबे की तो पूरी गणना ही नहीं की जा सकती है

आर बी सरदेसाई:- पानीपत के तृतीय युद्ध ने यह निश्चित नहीं किया कि भारत पर कौन शासन करेगा बल्कि यह निश्चित किया कि भारत पर कौन शासन नहीं करेगा

Anglo-Maratha Relations | अंगल मराठा संबंध

1. 1761 Madhavrao I Became Peshwa
माधवराव प्रथम पेशवा बने

1772 Death of Madhavrao I
माधवराव I की मृत्यु

अंग्रेज → चिंता

Internal Maratha Conflict
मराठों में आपसी कलह

British Expansionism
विस्तारवाद

British Worry / Concern
चिंता

Uncle: Raghunath Rao
चाचा - रघुनाथ राव

Murder
हत्या

Younger Brother: Narayan Rao
छोटा भाई - नारायण राव

Treaty of Surat with the British (1775)
अंग्रेजों के साथ सूरत की संधि (1775)

Madhavrao I
माधवराव I

Mahadji Shinde
महाराजी सिंधिया

Key Facts: Nana Fadnavis
प्रमुख तथ्य: नाना फडणवीस

1) Original Name → Balaji Janardan Bhanu
मूल नाम बालाजी बनार्दन भानु

2) Called 'Machiavelly' by James Grant Duff
जैम्स ग्रांट डफ → मैकिवेली

3) Highly Clever & Influential Maratha Minister
अत्यंत चतुर और प्रभावशाली मराठा मंत्री

4) Nana also Fought Tipu Sultan
नाना का टीपू सुल्तान से भी युद्ध हुआ था

Nana Fadnavis and Mahadji Shinde made Madhavrao-II (son of Narayana Rao) Peshwa
नाना फडणवीस और महाराजी सिंधिया ने माधवराव-II (नारायणराव का पुत्र) को पेशवा बनाया

Anglo-Maratha Conflict
अंगल मराठा संबंध

C) अवध का विलय (1856)
C) Annexation of Awadh (1856)

1) 1764 → बक्सर के युद्ध में हार

2) 1765 → इलाहाबाद की संधि

3) 1801 → वेलेस्ली से सहायक संधि

4) अवध में कुप्रशासन (कारण: ब्रिटिश हस्तक्षेप)

William Bentinck Lord Auckland Lord Hardinge

1837 में लॉर्ड ऑकलैंड ने नवाब मुहम्मद अली 1837 में लॉर्ड ऑकलैंड ने नवाब मुहम्मद अली शाह के मध्य संधि - कुप्रशासन की स्थिति में कंपनी का आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप

5) 1848 → कर्नल स्लीमन रिपोर्ट (कुप्रशासन है, परंतु विलय की आवश्यकता नहीं)

Defeat in Battle of Buxar

Treaty of Allahabad

Subsidiary Alliance with Wellesley

Maladministration in Awadh (Reason: British Interference)

* Stern warnings by William Bentinck, Lord Auckland, & Lord Hardinge

* 1837 Treaty between Lord Auckland & Nawab Muhammad Ali Shah - Company's interference in internal affairs if maladministration occurs

Colonel Sleeman Report (Maladministration exists, but annexation is not needed)

CONTEYUEL MAPS
संदर्भ नक्शे

INDIA AT THE CLOSE OF BRITISH ADMINISTRATION

युद्ध	अंग्रेज	कारण	परिणाम
प्रथम अंगल मराठा युद्ध (1775-82) पेशवा माधवराव - II	वॉरेन हेस्टिंग्स	- पेशवा पद को लेकर मतभेद (माधवराव व रघुनाथ राव) - अंग्रेजों का वाणिज्यिक व राजनीतिक लाभ	1775 - सूरत की संधि (रघुनाथ राव और अंग्रेज) - वडगांव की लड़ाई (1779): मराठों ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को हराया था। 1782 - सालबाई की संधि (हेस्टिंग्स+फडणवीस)
द्वितीय अंगल मराठा (1803-05) पेशवा बाजीराव II	लॉर्ड वेल्लेस्ली	- पेशवा बाजीराव II द्वारा अंग्रेजों के साथ बसीन की संधि (सहायक संधि) करना - नेपोलियन का उदय + फ्रांसीसी का भय	- नवंबर 1803 - भोसले - देवगांव की संधि - दिसंबर 1803 - सिंधिया - सुर्जीअर्जन गाँव की संधि 1805 - होलकर - राजपुर घाट की संधि
तृतीय अंगल मराठा युद्ध (1817-19) पेशवा बाजीराव द्वितीय	लॉर्ड हेस्टिंग्स तथा मेल्कम	- लॉर्ड हेस्टिंग्स के द्वारा पिंडारियों का दमन - खड़की / किरकी का युद्ध — 1817 - कोरेगाँव का युद्ध — 1818 - दौलतराव सिंधिया : ग्वालियर संधि (1817) - होल्कर - मंदसौर की संधि (1818)	- भोसले (नागपुर) — सीताबर्डी का युद्ध, 1817 → नागपुर अंग्रेजों के अधीन। - कीर्की (1817): पेशवा बाजीराव II पराजित → पुणे अंग्रेजों के अधीन - महिंदपुर (1817): होल्कर पराजित → मंदसौर की संधि → मालवा अंग्रेजों के अधीन।

C) अवध का विलय (1856)
C) Annexation of Awadh (1856)

1764 → बक्सर के युद्ध में हार

1765 → इलाहाबाद की संधि

1801 → वेलेस्ली से सहायक संधि

अवध में कुप्रशासन (कारण: ब्रिटिश हस्तक्षेप)

William Bentinck Lord Auckland Lord Hardinge

1837 में लॉर्ड ऑकलैंड ने नवाब मुहम्मद अली 1837 में लॉर्ड ऑकलैंड ने नवाब मुहम्मद अली शाह के मध्य संधि - कुप्रशासन की स्थिति में कंपनी का आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप

1848 → कर्नल स्लीमन रिपोर्ट (कुप्रशासन है, परंतु विलय की आवश्यकता नहीं)

Defeat in Battle of Buxar

Treaty of Allahabad

Subsidiary Alliance with Wellesley

Maladministration in Awadh (Reason: British Interference)

* Stern warnings by William Bentinck, Lord Auckland, & Lord Hardinge

* 1837 Treaty between Lord Auckland & Nawab Muhammad Ali Shah - Company's interference in internal affairs if maladministration occurs

Colonel Sleeman Report (Maladministration exists, but annexation is not needed)

6. 1854 → जेम्स आउटरम रिपोर्ट

- कुप्रशासन + विलय
- दलहौजी द्वारा स्वीकृत (13 फरवरी 1856)
- नवाब वाजिद अली शाह (कलकत्ता भेजा)
- राजधानी: लखनऊ

7. परिणाम व प्रभाव:

- सैन्य असंतोष तथा 1857 की क्रांति
- जनता में असंतोष
- वास्तविक विश्वास की महान अवहेलना, महान डकैती (चरम सीमा पर डकैती) व निंदनीय कार्य।
- जॉन शेफर्ड - “यह विलय भारतीयों की स्वतंत्रताओं को बढ़ावा देने में उतना ही सफल होगा जितना उनके अधिकारों और हितों की रक्षा करने में।”

सिंध का विलय - 1843

मुख्य विवरण

वर्ष 1843

महर्षि जमशेदजी

कमांडर: सर चार्ल्स नेपियर

शारक: तालपुर वंश के अमीर

विलय के प्रमुख कारण

अफगान युद्ध की विफलता (1839-42) → अंग्रेजों की हार से शीक बल करने की जरूरत

राजनीतिक और व्यापारिक महत्व - सिंधु नदी पर नियंत्रण, कस से गुज़रा, व्यापार की सुविधा

सिंधियों का उत्थरण - 1832 की संधि का उल्लंघन, कैप्टन अय्योब नहीं करने का बाद तैयार

निर्णायक युद्ध
DECISIVE BATTLES

मियाणी का युद्ध (फरवरी 1843) - ब्रिटिश किव, अमीरों की हार

दुबो का युद्ध (मार्च 1843) - निर्णायक जीत, सिंध का पूर्ण विलय

बंबई मेडोसेनी (1843) - सिंध का विलय

अंग्रेज 1843 में सर चार्ल्स नेपियर - बंबई प्रेसिडेंसी में विलय सिंध के पहले गवर्नर

विवादास्पद घटना और प्रतिक्रिया

सर चार्ल्स नेपियर ने लिखा:

“दो सिंध को हड़पने का कोई हक नहीं है, फिर भी हम ऐसा करने और यह एक बहुत ही लाभदायक, उपयोगी और मानवीय निर्यात (Rascality) होगा।”

“Peccavi”
मेघर का कब्रानामा संज्ञा।

परिणाम
AFTERMATH

सिंध